**E-ISSN:** 2664-603X
**P-ISSN:** 2664-6021
IJPSG 2024; 6(1): 190-194
www.journalofpoliticalscience.com
Received: 02-03-2024
Accepted: 03-04-2024

**डॉ० करुणा कुमारी**
राजनीति विज्ञान विभाग, सामाजिक विज्ञान संकाय, भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा, बिहार, भारत

**Corresponding Author:**
**डॉ० करुणा कुमारी**
राजनीति विज्ञान विभाग, सामाजिक विज्ञान संकाय, भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा, बिहार, भारत

# भारत-मालदीव द्विपक्षीय संबंध : 2014-2023

**डॉ० करुणा कुमारी**

**DOI:** https://doi.org/10.33545/26646021.2024.v6.i1c.322

**सारांश**
भारत और मालदीव के बीच सदियों से चले आ रहे ऐतिहासिक संबंध हैं। सांस्कृतिक समानताएँ और ऐतिहासिक संबंधों ने मज़बूत राजनयिक संबंधों की नींव रखी है। मालदीव, हिंद महासागर में रणनीतिक रूप से स्थित एक द्वीपसमूह, भारत के लिये एक महत्त्वपूर्ण भागीदार रहा है, और ऐतिहासिक व्यापार मार्गों ने सदियों से दोनों देशों के बीच अंतः क्रिया की सुविधा प्रदान की है। मालदीव एक छोटा सा द्विपीय मुल्क है। मालदीव का क्षेत्रफल महज 300 वर्ग किलोमीटर। अगर क्षेत्रफल के मामले में तुलना करें तो दिल्ली मालदीव से क़रीब पाँच गुनी बड़ी है। मालदीव छोटे-छोटे क़रीब 1200 द्वीपों का समूह है। मालदीव की कुल आबादी 5.21 लाख है। मालदीव भौगोलिक रूप से दुनिया का सबसे बिखरा हुआ देश है।
भारत में एन०डी०ए-2 की सरकार वर्ष 2014 में बनी। वर्ष 2014 में नरेंद्र मोदी भारत के प्रधानमंत्री बने। इसके बाद पुनः वर्ष 2019 में एन०डी०ए० सरकार बनी। मोदी सरकार ने अपने विदेश नीति में पड़ोस प्रथम की नीति को अपनाया। इस नीति के तहत दक्षिण एशिया के देशों के साथ मित्रता और सहयोग पर आधारित रिश्ते स्थापित करने की कोशिश किया गया। भारत ने वर्ष 2014 से मालदीव के साथ मित्रतापूर्ण संबंध स्थापित करने की पहल किया है। मालदीव में इस दौरान राष्ट्रपति मोहम्मद नशीद एवं राष्ट्रपति इब्राहिम मोहम्मद सोलिह ने भारत फ़र्स्ट नीति के तहत भारत से मित्रतापूर्ण संबंध रखा। लेकिन मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद इब्राहिम सोलिह ने चीन फ़र्स्ट की नीति को अपनाया है और इस वजह से भारत के प्रति शत्रुतापूर्ण नीति को अपना रहा है।

**कूटशब्द:** एन०डी०ए० सरकार, पड़ोस प्रथम नीति, मालदीव, भारत फ़र्स्ट नीति, सामरिक रणनीति

## प्रस्तावना
साल 1965 में मालदीव अंग्रेज़ों से आज़ाद हुआ और मालदीव की स्वतंत्रता को मान्यता देने और उसके साथ राजनयिक संबंध बनाने वाले पहले देशों में से एक था, भारत। दोनों देशों के बीच सैन्य, आर्थिक और रणनीतिक क्षेत्रों में घनिष्ठ-मैत्रीपूर्ण संबंधों का इतिहास रहा है और, आज स्थिति 'लक्षद्वीप बनाम मालदीव' हो गई है। मालदीव के नेता ख़ेमे बंट गए हैं। घरेलू राजनीति में बयानबाज़ी हो रही है। लेकिन भारत-मालदीव संबंधों में नफ़ा ज़्यादा किसका है, ये दोनों देशों को पता है।
दोनों देशों के बीच 1,010 किलोमीटर लंबी समुद्री सीमा है। भारत, मालदीव के पर्यटन बाज़ार में एक बड़ा प्लेयर है। 2023 में कुल जितने पर्यटक मालदीव गए, उनमें दूसरे नंबर पर भारतीय ही थे. भारत और मालदीव दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (SAARC), दक्षिण एशियाई आर्थिक संघ के संस्थापक सदस्य और दक्षिण एशिया मुक्त व्यापार समझौते के हस्ताक्षरकर्ता हैं (विदेश मंत्रालय 2023, पृष्ठ संख्या-1)। इसके साथ ही मालदीव का तीसरा सबसे अच्छा कारोबारी दोस्त भी भारत ही है। 2016 और 2022 के बीच तो व्यापार लगभग दोगुना हो गया है। केवल 2022 में भारत ने मालदीव को 4,100 करोड़ से ज़्यादा का सामान निर्यात किया।
भारत और मालदीव के रिश्ते में बीते कुछ महीनों से लगातार तनाव देखने को मिल रहा है, जो हाल के दिनों में काफी ज्यादा बढ़ा है। लंबे समय तक एक-दूसरे के भरोसेमंद सहयोगी रहे भारत और मालदीव के बीच रिश्तों में तनाव का फायदा उठाने में चीन जुटा हुआ है। चीन जिस तरह से मालदीव का इस्तेमाल कर रहा है, वह भारत की सुरक्षा के लिए खतरा के सबब भी हो सकता है (अब्ज़र्वर रीसर्च फ़ाउंडेशन 2023, पृष्ठ संख्या-1)। इसमें सबसे नई बात जो सामने आई है, वो ये है कि मालदीव ने चीन के अनुसंधान पोत जियांग यांग होंग-3 को इजाजत दी है।
विशेषज्ञों का कहना है कि ये अनुसंधान जहाज वास्तव में चीन के लिए एक सैन्य उद्देश्य की पूर्ति करता है और ये जहाज जासूसी के काम में आने वाले साजो-सामान से लैस है। चीनी जहाज का मालदीव जाना इसलिए चिंता का सबब है क्योंकि इसका मकसद हिंद महासागर में संवेदनशील सैन्य परीक्षणों की जासूसी करना हो सकता है। इसके अलावा जहाज द्वारा जुटाए गए समुद्री डेटा से चीन की पनडुब्बी युद्ध करने और क्षेत्र में सैन्य अभियानों की योजना बनाने की क्षमता में मददगार साबित होगा।

जो निश्चित ही भारत के लिए सुरक्षा की दृष्टि से अच्छी खबर नहीं है। बीते कई दशकों से भारत ही मालदीव का सबसे करीबी रक्षा साझेदार है। 2018 से 2023 तक मालदीव के राष्ट्रपति रहे इब्राहिम सोलिह कहते हैं कि मालदीव भारत की संवेदनशीलता का सम्मान करने में सावधान था और उसने चीन के साथ बहुत कम सुरक्षा सहयोग किया (मनोहर पर्रिकर रक्षा अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान 2023, पृष्ठ संख्या-1)। 2023 में चुनाव जीतकर राष्ट्रपति बने मोहम्मद मुइज्जू का नजरिया इससे एकदम अलग है। मुइज्जू अपने से पूर्व की सरकारों के "इंडिया फर्स्ट" नीति का समर्थन नहीं करते हैं। मुइज्जू ने चुनाव जीतने के तुरंत बाद ही भारत सरकार से मालदीव में अपने सैन्यकर्मियों को वापस बुलाने के लिए कहा है। मुइज्जू ने राष्ट्रपति के रूप में अपनी पहली विदेश यात्रा के लिए भी चीन को ही चुना। उन्होंने साफतौर पर चीन की मालदीव में भूमिका बढ़ाने और भारत पर निर्भरता कम करने का इशारा किया है। चीन से मालदीव के रिश्ते को समझने के लिए दोनों देशों के बीच संबंधों से शुरुआत से ही चीजों को देखना होगा।

**भारत-मालदीव संबंधों का संक्षिप्त इतिहास**

हिंद महासागर में अपनी रणनीतिक स्थिति के कारण, मालदीव ने 16वीं और 17वीं शताब्दी में पुर्तगाली, डच और फ्रांसीसी खोजकर्ताओं को आकर्षित किया। बाद में यह ब्रिटिश आर्थिक और रणनीतिक प्रभाव में आ गया, 1965 में स्वतंत्रता प्राप्त करने तक ब्रिटिश संरक्षित राज्य बन गया। एक स्वतंत्र राज्य के रूप में, मालदीव 1965 में संयुक्त राष्ट्र में शामिल हो गया और भारत, श्रीलंका और पाकिस्तान सहित पड़ोसी देशों के साथ संबंध विकसित किए। भारत और मालदीव ऐतिहासिक संबंधों, सांस्कृतिक और वाणिज्यिक आदान-प्रदान और रणनीतिक सुरक्षा सहयोग पर आधारित अधिकतर सौहार्दपूर्ण संबंधों का इतिहास साझा करते हैं (विदेश मंत्रालय 2023, पृष्ठ संख्या-1)।

1981 में मैत्री संधि पर हस्ताक्षर के साथ दोनों देशों के बीच संबंधों को औपचारिक रूप दिया गया। हालाँकि, राष्ट्रपति मौमून के तहत, मालदीव की विदेश नीति ने भारत के प्रति उदासीन रुख अपनाया। अब्दुल्ला यामीन के राष्ट्रपति काल के दौरान गतिशीलता में बदलाव बढ़ा, जिसके दौरान बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) के माध्यम से मालदीव में चीन का प्रभाव बढ़ गया, हालांकि राष्ट्रपति इब्राहिम मोहम्मद सोलिह के दौरान 'इंडिया फर्स्ट' विदेश नीति के साथ संबंधों में काफी सुधार हुआ। हालाँकि, 2023 में मालदीव के राष्ट्रपति के रूप में मोहम्मद मुइज्जू के चुनाव से चीन के प्रति राजनयिक प्राथमिकताओं में संभावित बदलाव का पता चला और मित्रता की सतह कमजोर होने लगी (अब्ज़र्वर रीसर्च फ़ाउंडेशन 2023, पृष्ठ संख्या-1)।

राष्ट्रपति मुइज्जू का चुनाव 'इंडिया फर्स्ट' नीति से विचलन का प्रतीक है। पद संभालने पर, उन्होंने भारत से भारत द्वारा दिए गए डोर्नियर विमान और हेलीकॉप्टरों के संचालन के लिए जिम्मेदार अपने 88 रक्षा कर्मियों को वापस बुलाने का अनुरोध किया। इन संपत्तियों का उपयोग मालदीव के विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र (ईईजेड) की निगरानी के साथ-साथ मालदीव में एक हजार से अधिक द्वीपों पर आपदा राहत अभियान चलाने के लिए किया जाता है। इसके अतिरिक्त, उन्होंने कोलंबो सुरक्षा कॉन्क्लेव के ढांचे के भीतर समुद्री सुरक्षा को बढ़ावा देने में भूमिका निभाई। यह बदलाव भारतीय सैनिकों की वापसी का अनुरोध करने और 2019 जल सर्वेक्षण समझौते जैसे प्रमुख समझौतों को रद्द करने जैसे फैसलों में स्पष्ट था (मनोहरन 2024, पृष्ठ संख्या-42)।

**हिंद महासागर में प्रतिस्पर्धा**

मालदीव जहाँ स्थित है, वही उसे ख़ास बनाता है. हिन्द महासागर के बड़े समुद्री रास्तों के पास मालदीव स्थित है। हिन्द महासागर में इन्हीं रास्तों से अंतरराष्ट्रीय व्यापार होता है। खाड़ी के देशों से भारत में ऊर्जा की आपूर्ति इसी रास्ते से होती है। ऐसे में भारत का मालदीव से संबंध ख़राब होना किसी भी लिहाज से ठीक नहीं माना जा रहा है। हाल के दशकों में हिन्द महासागर में आर्थिक और सैन्य गतिविधियों को लेकर होड़ बढ़ी है। हिन्द महासागर में चीन अपनी मौजूदगी बढ़ा रहा है। ऐसे में मालदीव उसके साथ आता है तो उसे पैर जमाने में और मदद मिलेगी। कहा जा रहा है कि मालदीव की मौजूदा मुइज़्ज़ू सरकार खुलकर चीन के साथ है। मुइज़्ज़ू ने जब चुनाव जीता तो हेडलाइन बनी कि मालदीव में चीन परस्त उम्मीदवार को मिली जीत (पटनायक 2023, पृष्ठ संख्या-1)। जुलाई 2015 में मालदीव ने अपना संविधान संशोधन किया था। इसके तहत विदेशी स्वामित्व वाले लैंड लेने की अनुमति दी गई थी। इसके बाद अटकलें तेज़ हो गई थीं कि चीन मालदीव में रणनीतिक ठिकाने विकसित करेगा।

चीन और मालदीव ने 1972 में औपचारिक रूप से राजनयिक संबंध स्थापित किए लेकिन मालदीव 1990 और 2000 के दशक में चीन के लिए रुचि का क्षेत्र बन गया क्योंकि हिंद महासागर में उसने अपनी शक्ति और उपस्थिति बढ़ाने पर ज्यादा ध्यान दिया। एशियन स्टडीज सेंटर के डायरेक्टर जैफ स्मिथ कहते हैं, हिंद महासागर में पूर्व-पश्चिम समुद्री व्यापार का सुपरहाइवे है। मालदीव को इसमें विशाल विशेष आर्थिक क्षेत्र (ईईजेड) प्राप्त है, जिसमें 325,000 वर्ग मील से अधिक प्रमुख हिंद महासागर अचल संपत्ति शामिल है। मालदीव चीन के समुद्री व्यापार मार्गों के करीब बैठता है जो इसके निर्यात को बाजारों तक पहुंचने और इसके ऊर्जा आयात को चीनी अर्थव्यवस्था को बेहतर करने के लिए जरूरी है और इसलिए रणनीतिक रूप से भी महत्वपूर्ण है (ज़हीर 2023, पृष्ठ संख्या-9)।

मालदीव ने 2009 में बीजिंग में अपना दूतावास खोला और उस समय के राष्ट्रपति नशीद ने 2010 में चीन का का दौरा किया। चीन मालदीव में एक विशाल आवास परियोजना को फंड करने पर भी सहमत हुआ लेकिन नशीद देश की "इंडिया फर्स्ट" नीति के दृढ़ समर्थक बने रहे। 2012 में तख्तापलट में नशीद को सत्ता से हटा दिया गया। इसके बाद अब्दुल्ला यामीन ने मालदीव को चीन के करीब लाने में अहम भूमिका निभाई। यामीन सरकार ने बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के लिए चीन से बड़े पैमाने पर ऋण लिया और बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) में भी शामिल हो गई। यामीन ने चीन के साथ मालदीव के पहले मुक्त व्यापार समझौते पर भी हस्ताक्षर किए। वह चीन के साथ एक संयुक्त नौसैनिक ऑब्जर्वेशव फैसिलिटी विकसित करने पर भी सहमत हुए।

यामीन सरकार की इन नीतियों से भारत मालदीव संबंधों में तनाव आया और 2015 में पीएम मोदी ने मालदीव का दौरा भी रद्द कर दिया था। 2016 में मालदीव ने भारत की आपत्तियों के बावजूद तीन चीनी नौसैनिक युद्धपोतों को यात्रा की अनुमति दी थी (अब्ज़र्वर रीसर्च फ़ाउंडेशन 2023, पृष्ठ संख्या-6)। इससे भारत-मालदीव के रक्षा संबंधों को नुकसान हुआ। वहीं मालदीव ने दो भारतीय हेलीकॉप्टरों के पट्टे का नवीनीकरण भी नहीं किया। भारत और मालदीव के संबंध 2018 में बेहतर हुए जब इब्राहिम सोलिह यामीन को हराकर राष्ट्रपति बने। सोलिह देश की पूर्व "इंडिया फर्स्ट" विदेश नीति के समर्थक थे। उन्होंने कई उच्च स्तरीय समझौतों पर हस्ताक्षर करते हुए भारत के साथ रक्षा सहयोग बहाल किया।

वर्ष 2023 में चीजें फिर से बदलीं जब मोहम्मद मुइज्जू ने राष्ट्रपति चुनाव में सोलिह को हरा दिया। चुनाव जीतते ही मुइज्जू ने भारत से मालदीव में अपने सैन्य कर्मियों को हटाने को कहा और एक प्रमुख रक्षा समझौते को आगे बढ़ाने से इनकार कर दिया। इसके बाद हाल ही में पीएम नरेंद्र मोदी के लक्षद्वीप दौरे के बाद उनके मंत्रियों की टिप्पणियों से हुए विवाद ने भी द्विपक्षीय संबंधों को नुकसान पहुंचाया। दूसरी ओर मुइज्जू पदभार संभालने के बाद से चीन-मालदीव संबंध अच्छे हुए हैं। उनकी सरकार ने चीन के साथ कई आर्थिक समझौतों पर हस्ताक्षर किए, जिनमें से कई भारत पर निर्भरता कम करने के लिए निर्धारित थे। इसके बाद हाल ही में चीनी जहाज जियांग यांग होंग-3 को मालदीव ने इजाजत दी है।

**मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मोईज्जु का भारत विरोधी नीति**

कुछ ही महीनों में मोहम्मद मुइज़्ज़ू विपक्ष के संयुक्त उम्मीदवार के रूप में उभरे क्योंकि कई मामलों के कारण पूर्व राष्ट्रपति यामीन चुनाव में हिस्सा नहीं ले सके। मुइज़्ज़ू राष्ट्रपति बनने से पहले मालदीव की राजधानी माले के मेयर थे। इब्राहिम सोलिह ने अपनी विदेश नीति में भारत को तवज्जो देते हुए 'इंडिया फर्स्ट' की नीति अपनाई थी। सोलिह के नेतृत्व में मालदीव और भारत के बीच कई रक्षा और आर्थिक समझौते हुए। मुइज़्ज़ू ने राष्ट्रपति बनते ही संकेत दे दिया कि उनकी विदेश नीति में भारत से दूरी बनाना प्राथमिकता में है। उन्होंने पहला विदेश दौरा तुर्की का

किया। मुइज़्ज़ू ने एक परंपरा तोड़ी क्योंकि इससे पहले मालदीव का नया राष्ट्रपति पहला विदेशी दौरा भारत का करता था (ठाकुर 2023, पृष्ठ संख्या-424)।

तुर्की के बाद मुइज़्ज़ू यूएई गए और हाल ही में चीन से मालदीव लौटे। मुइज़्ज़ू ने चीन को अहम साझेदार बताया है और कई महत्वपूर्ण समझौते किए हैं। मुइज़्ज़ू ने शपथ लेने के बाद राष्ट्र के नाम पहले संबोधन में मालदीव से भारतीय सैनिकों की वापसी की बात दोहराई। उन्होंने कहा कि मुल्क की स्वतंत्रता और संप्रभुता उनकी सरकार के लिए ज़्यादा ज़रूरी है। साल 2019 में मालदीव के समुद्री इलाक़े में सर्वे को लेकर भारत से समझौता हुआ था, जिसे मुइज़्ज़ू की सरकार ने ख़त्म कर दिया। इब्राहिम सोलिह के राष्ट्रपति रहते पीएम मोदी ने मालदीव का दौरा किया था, तभी हाइड्रोग्राफिक सर्वेइंग को लेकर एमओयू हुआ था। इसका मक़सद समुद्री सुरक्षा में सहयोग बढ़ाना था। सोलिह सरकार इस समझौते को लेकर भी विपक्ष के निशाने पर रही थी। दिसंबर में मुइज़्ज़ू सरकार ने घोषणा कर दी कि यह समझौता अब आगे नहीं बढ़ेगा। इन समझौते से अलग होने को मुइज़्ज़ू की चीन से बढ़ती क़रीबी के रूप में देखा जा रहा है। कहा जा रहा है कि मालदीव में जो रक्षा बढ़त भारत को सोलिह सरकार में मिली थी वो अब पूरी तरह से चीन के साथ शिफ़्ट हो गई है (वेग्नर 2023, पृष्ठ संख्या-22)।

डॉ. मुइज्जू की तुर्की और चीन की यात्राओं से रणनीतिक पुनर्संरेखण रेखांकित होता है, जो पहले भारत का दौरा करने की परंपरा से विराम का संकेत देता है। तनाव बढ़ने का कारण, कुछ हद तक, चीन के प्रति मालदीव सरकार के कथित झुकाव और हिंद महासागर में उसके बढ़ते प्रभाव की आशंकाओं को माना जा सकता है। मुइज़ू की चीन यात्रा के दौरान, एक संयुक्त बयान ने प्रमुख चीनी पहलों में मालदीव के व्यापक रणनीतिक सहयोग और भागीदारी की स्थापना की।

दोनों पार्टियां अपने संबंधित मूल हितों की रक्षा करने, राष्ट्रीय संप्रभुता, स्वतंत्रता और गरिमा को बनाए रखने और मालदीव के मामलों में बाहरी हस्तक्षेप का जोरदार विरोध करने के लिए एक-दूसरे को मजबूत समर्थन प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। दिलचस्प बात यह है कि चीन से लौटने के बाद, मुइज़ू ने भारत को एक अल्टीमेटम जारी किया, जिसमें 15 मार्च तक अपने गैर-लड़ाकू सैन्य कर्मियों की वापसी की मांग की गई। इसके अलावा, उन्होंने एक पीआरसी जहाज, जियांग यांग होंग-03 की मेजबानी करने की योजना की घोषणा की है, जिसके बारे में कहा जाता है कि एक दोहरे उद्देश्य वाला समुद्र विज्ञान मिशन (अब्ज़र्वर रीसर्च फ़ाउंडेशन 2023, पृष्ठ संख्या-4)।

चीन को खुश करने के लिए मालदीव का फैसला क्षेत्रीय सुरक्षा को बाधित करने की क्षमता रखता है। भारत को, स्वाभाविक रूप से, इन विकासों के बारे में चिंतित होना चाहिए, विशेष रूप से चीन और चीनी "अनुसंधान जहाजों" और जासूसी जहाजों के साथ संयुक्त रूप से नीली अर्थव्यवस्था के विकास के संबंध में जो हिंद महासागर को खंगाल रहे हैं और निजी जानकारी एकत्र कर रहे हैं। ये कार्रवाइयां मालदीव की विदेश नीति में चीन के साथ घनिष्ठता की ओर बदलाव का संकेत देती हैं, जिससे भारत के साथ देश के संबंधों और इसके व्यापक भू-राजनीतिक निहितार्थों के बारे में चिंताएं बढ़ जाती हैं (सेंटर फ़ोर लैंड वेल्फ़ेयर स्टडीज़ 2023, पृष्ठ संख्या-1)।

भारत और मालदीव के बीच संबंधों में उस समय खटास आ गई जब द्वीप राष्ट्र के कुछ मंत्रियों ने केरल के तट पर स्थित केंद्र शासित प्रदेश को पर्यटन स्थल के रूप में प्रचारित करने के लिए लक्षद्वीप की दो दिवसीय यात्रा के दौरान साझा की गई तस्वीरों पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निशाना साधा। मालदीव सरकार ने खुद को टिप्पणी से अलग कर लिया और तीन उप मंत्रियों को निलंबित कर दिया लेकिन राजनयिक विवाद जारी है। भारत और मालदीव दोनों ने जैसे को तैसा कदम उठाते हुए एक दूसरे के राजनयिक को तलब किया।

## मालदीव को भारत की सहायता

राजीव गांधी से लेकर नरेंद्र मोदी तक और मौमून अब्दुल ग़यूम से लेकर मोहम्मद नशीद तक, हर कदम पर भारत ने मालदीव का साथ दिया। ये बात मालदीव के नेताओं को याद रखनी चाहिए। दोनों देशों के बीच सैन्य, आर्थिक और रणनीतिक क्षेत्रों में घनिष्ठ-मैत्रीपूर्ण संबंधों का इतिहास रहा है। और, आज स्थिति 'लक्षद्वीप बनाम मालदीव' हो गई है। मालदीव में ख़ेमे बंट गए हैं। मालदीव में नेताओं के बीच बयानबाज़ी हो रही है। लेकिन भारत-मालदीव संबंधों में नफ़ा ज़्यादा किसका है, ये दोनों देशों को पता है (भारतीय वैश्विक संबंध परिषद 2023, पृष्ठ संख्या-1)।

भौगोलिक निकटता ने भी भारत को मालदीव में राजनीतिक, सुरक्षा और मानवीय संकटों के दौरान पहला प्रतिक्रियाकर्ता बना दिया है। भारतीय सैनिकों ने नवंबर 1988 में विदेशी-भाड़े के सैनिकों द्वारा समर्थित तख्तापलट के प्रयास को सफलतापूर्वक टाल दिया। वर्ष 2004 के हिंद महासागर सुनामी, 2014 में जल संकट और सीओवीआईडी-19 महामारी के बाद भारतीय राहत कार्यों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । दरअसल, मालदीव जनवरी 2021 में भारत के कोविशील्ड टीकों का पहला प्राप्तकर्ता था । बड़ी संख्या में मालदीव के लोग शिक्षा और चिकित्सा उपचार के लिए भी भारत आते हैं।

### *ऑपरेशन कैक्टस*

3 नवंबर, 1988 को मालदीव के तत्कालीन राष्ट्रपति मौमून अब्दुल ग़यूम भारत आने वाले थे। उनको लाने के लिए एक भारतीय विमान उड़ भी चुका था। मगर उसे आधे रास्ते से ही लौटना पड़ा, क्योंकि भारत के प्रधानमंत्री राजीव गांधी को अचानक चुनाव के सिलसिले में दिल्ली से बाहर जाना पड़ रहा था। इस बीच मालदीव में तख़्तापलट का एक प्लैन शुरू हो चुका था। कारोबारी अब्दुल्ला लुथूफ़ी और उनके साथी सिक्का अहमद इस्माइल मानिक के नेतृत्व में एक समूह ने सरकार को उखाड़ फेंकने के लिए श्रीलंका के अलगाववादी संगठन पीपल्स लिबरेशन ऑर्गनाइज़ेशन ऑफ़ तमिल-ईलम (PLOTE) के लड़ाकों की सहायता ली (गांगुली 2015, पृष्ठ संख्या-48)। लड़ाके पर्यटकों के भेष में राजधानी माले पहुंच गए। देखते ही देखते राजधानी की सड़कों पर कत्लेआम शुरू हो गया। उन्होंने सरकारी इमारतों, हवाई अड्डे, बंदरगाहों, टेलीविज़न और रेडियो स्टेशनों पर क़ब्ज़ा कर लिया।

राष्ट्रपति ग़यूम को एक सेफ़ हाउस में छिपाया गया और उन्होंने फ़ौरन उन्हें और उनकी सरकार को बचाने के लिए मदद मांगी। श्रीलंका, पाकिस्तान, सिंगापोर और अमेरिका तक ने मदद में असमर्थता जता दी। ब्रिटेन ने भी हाथ खड़े किये, लेकिन इतना ज़रूर कहा कि भारत से मदद मांग लीजिए। अंततः ग़यूम ने भारत फोन मिलाया। राजीव गांधी ने फ़ैसला किया कि भारतीय सेना को मालदीव में भेजा जाएगा। कुछ ही देर में 150 कमांडो से भरे एक विमान ने आगरा से उड़ान भरी और उतरते ही भारतीय सैनिकों ने स्थिति पर क़ाबू पा लिया। ग़यूम के कॉल के 9 घंटों के भीतर भारतीय पैराट्रूपर्स मालदीव में थे। राष्ट्रपति के सेफ़ हाउस को सुरक्षित किया और मालदीव के राष्ट्रपति और सरकार को बचा लिया। इस घटना को भारत-मालदीव संबंधों में मील का पत्थर माना जाता है।

### *ऑपरेशन सी-वेक्स*

26 दिसंबर, 2004 को भारतीय महासागर के अंदर एक भूकंप आया। शुरू में इसकी तीव्रता 6.8 नापी गई, मगर बाद में मालूम चला कि इसकी तीव्रता 9.3 के आस-पास थी। इस भूकंप से 50-55 फीट ऊंची लहरें उठीं। चेन्नई में भी इस भूकंप के झटके महसूस किए गए थे। लेकिन इंडोनेशिया, श्रीलंका, थाईलैंड, तंजानिया और मालदीव जैसे देशों की स्थिति तो बहुत ख़राब हो गई। तट के तट तबाह हो गए। मालदीव के 9 द्वीपों को छोड़कर बाक़ी सब सूनामी की चपेट में आ गए। दिन के शुरूआती घंटों में ही माले समेत बड़े-बड़े शहर बाढ़ से ढक गए। कुल 82 लोग मारे गए और 24 लापता बताए गए, जिन्हें बाद में मृत मान लिया गया।

इस मुश्किल समय में भारत मदद के लिए आगे आया और हमने 'ऑपरेशन सी वेव्स' चलाया। बस 24 घंटे के अंदर भारत का तटरक्षक डोर्नियर विमान और वायु सेना के दो एवरो विमान मालदीव पहुंचे। राहत अभियान जारी रहे, इसके लिए ये विमान मालदीव में ही रुके रहे। फिर, अगले दो दिनों में INS मैसूर, INS उदयगिरि और INS आदित्य सहित दो हेलीकॉप्टर मालदीव पहुंचे। देश में जहां सबसे बुरे हाल थे, वहां राहत पहुंचाई। खाने-पीने से लेकर मेडिकल सामाग्री तक। भारतीय विदेश मंत्रालय के मुताबिक़, इस राहत अभियान में करीब 36.39 करोड़

रुपये ख़र्च हुए (विदेश मंत्रालय 2023, पृष्ठ संख्या-7)। इसके बाद भी दो किश्तों में मालदीव को 20 करोड़ रुपये की आर्थिक मदद दी गई।

### *मालदीव राजनैतिक संकट (2011)*

1 मई, 2011 को मालदीव में कुछ शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन शुरू हुए। स्थानीय रिपोर्ट्स के मुताबिक़, विरोध की मुख्य थी वजह बढ़ती क़ीमतें और ख़राब आर्थिक स्थिति। देश के पूर्व-राष्ट्रपति मौमून अब्दुल ग़यूम के नेतृत्व वाली मुख्य विपक्षी पार्टी मालदीवियन पीपल्स पार्टी ने राष्ट्रपति मोहम्मद नशीद को हटाने की मांग कर रही थी। 7 फरवरी, 2012 को राष्ट्रपति नशीद ने इस्तीफ़ा दे दिया और उपराष्ट्रपति मोहम्मद वहीद हसन माणिक ने नए राष्ट्रपति की शपथ ली। हालांकि, नशीद ने आरोप लगाए कि उन्हें बंदूक़ की नोक पर दफ़्तर से बाहर निकाला गया था। वहीं, वहीद समर्थकों का कहना था कि सत्ता का हस्तांतरण स्वैच्छिक और संवैधानिक तरीक़े से हुआ। इसके कई सालों बाद भी ये राजनीतिक संकट चलता रहा। 2014 में नरेंद्र मोदी भारत के प्रधानमंत्री बने और उन्होंने अमेरिका के साथ मिलकर नशीद की गिरफ़्तारी और बदसलूकी पर चिंता जताई थी। मार्च, 2015 में प्रधानमंत्री मोदी को मालदीव का दौरा करना था, लेकिन उन्होंने दौरा कैंसिल कर दिया। कथित तौर पर ये नशीद की गिरफ़्तारी के विरोध में उठाया गया क़दम था।

### *ऑपरेशन नीर*

4 दिसंबर 2014 को राजधानी माले के सबसे बड़े वॉटर ट्रीटमेंट प्लांट में आग लग गई। क़रीब एक लाख लोगों को पीने के पानी के लाले पड़ गए। प्लांट के फिर से चालू होने तक पूरे शहर को हर रोज़ 100 टन चाहिए था और मालदीव के पास अपनी स्थाई नदियां भी नहीं हैं, जहां से वो पानी की आपूर्ति पूरी कर सके। मालदीव की तत्कालीन विदेश मंत्री दुन्या मौमून ने तब भारत की विदेश मंत्री। सुष्मा स्वराज को फ़ोन किया और भारत ने मालदीव के मदद के लिए 'ऑपरेशन नीर' चलाया। भारत ने अपनी वायुसेना के हेवी लिफ़्ट ट्रांसपोर्टरों - C17 ग्लोबमास्टर III, IL76 - में बोतलबंद पानी मालदीव भेजा। इसके साथ ही भारतीय नौसेना ने भी INS सुकन्या, INS दीपक जैसे जहाज भेजे, जो खारे पानी से साफ़ पानी (desalination) बना सकते थे। मालदीव में भारत की इस मदद की भरसक सराहना की गई (गांगुली 2023, पृष्ठ संख्या-60)।

### *कोरोना काल*

साल 2020 में पूरी दुनिया कोविड-19 की चपेट में थी। सब देशों का हाल बेहाल था। उस वक़्त भी भारत ने बढ़-चढ़कर मालदीव की मदद की। मालदीव में भारतीय हाई कमीशन के मुताबिक़, भारत सरकार ने कोविड-19 की स्थिति से निपटने के लिए एक बड़ी मेडिकल टीम भेजी। जनवरी, 2021 में प्रधानमंत्री मोदी ने भारत में टीकाकरण अभियान की शुरुआत की थी और अगले 96 घंटों के अंदर भारत ने सबसे पहले मालदीव में वैक्सीन पहुंचाई। मालदीव पहला देश था, जहां भारत ने एक लाख कोविड वैक्सीन डोज़ भेजी थीं। इसके बाद, फरवरी 2021 में विदेश मंत्री डॉ. जयशंकर मालदीव गए थे। तब उन्होंने भी 1 लाख कोविड वैक्सीन की दूसरी खेप गिफ़्ट के तौर पर दी थी। इसके अलावा भारत ने मालदीव को 25 करोड़ अमेरिकी डॉलर यानी क़रीब 2 हज़ार करोड़ रुपये की आर्थिक मदद दी। इस मदद के लिए मालदीव के तत्कालीन विदेश मंत्री अब्दुल्ला शाहिद ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में भारत का आभार प्रकट किया था (अब्ज़र्वर रीसर्च फ़ाउंडेशन 2023, पृष्ठ संख्या-1)।

## निष्कर्ष

मुइज्ज़ू सरकार द्वारा पेश की गई चुनौती कड़ी है, लेकिन ऐसी नहीं जिसे भारत की अनुभवी और परिपक्व कूटनीति संभाल नहीं पाएगी। चीन भारत के पड़ोसियों के साथ अपने संबंधों का विस्तार और गहरा करना जारी रखे हुए है ताकि उसे घेरने के लिए उसके चारों ओर 'मोतियों की माला' तैयार की जा सके। भारत, अपनी नेबरहुड फर्स्ट, एक्ट ईस्ट और SAGAR (क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास) नीतियों के माध्यम से, अपने भूमि और समुद्री पड़ोसियों तक परिश्रमपूर्वक पहुंच रहा है। इन पहलों के सकारात्मक और उत्साहवर्धक परिणाम मिले हैं। भारत अपने सभी पड़ोसी देशों को लगातार प्राथमिकता दे रहा है। इसे अपने खेल को और आगे बढ़ाने और विकास सहयोग, सॉफ्ट पावर, संस्कृति, भाषा, व्यंजन, संगीत इत्यादि की सभी संपत्तियों का उपयोग करने की आवश्यकता है, ताकि अपने पड़ोसी देशों के साथ अपने संबंधों को काफी गहरा और उन्नत किया जा सके।

भारत मालदीव के साथ अपने लंबे समय से चले आ रहे रिश्ते को खतरे में नहीं डालना चाहता। इसीलिए, 2023-24 के लिए हाल ही में घोषित बजट में, मालदीव को 770.90 करोड़ रुपये की सहायता दी गई, जो 2022-23 में दिए गए 183.16 करोड़ रुपये से 300 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि है। दरअसल, मालदीव के अधिकांश लोग भारत के साथ अपने संबंधों को खतरे में नहीं डालना चाहते हैं। वे मुइज्ज़ू के बारे में नहीं बल्कि अपने भविष्य के बारे में चिंता करना पसंद करेंगे। मालदीव को यह समझना होगा कि भारत को चीन के साथ बातचीत से कोई दिक्कत नहीं है। हालाँकि, अगर मालदीव चीन के साथ बहुत करीब आता है और भारत को छोड़ने के लिए कहता है, तो इसे सकारात्मक रूप से नहीं लिया जाएगा।

नई दिल्ली को पारस्परिकता के साथ जवाब देना चाहिए और मालदीव को एक मजबूत संदेश भेजना चाहिए। यह प्रतिक्रिया विभिन्न रूप ले सकती है, जैसे राजनयिक दबाव, आर्थिक प्रतिबंध, या मालदीव की ओर से आगे की शत्रुतापूर्ण कार्रवाइयों को रोकने के उद्देश्य से अन्य उपाय। अंतर्निहित विचार यह है कि भारत को मालदीव की अनुचित आक्रामकता को बर्दाश्त नहीं करना चाहिए और स्थिति से निपटने के लिए निर्णायक कार्रवाई करनी चाहिए।

## संदर्भ


1. विदेश मंत्रालय, भारत सरकार (2022), भारत-मालदीव संबंध, URL: https://www.mea.gov.in/Portal/ForeignRelation/MALDIVES_23_02_2016_hindi.pdf
2. मनोहर पर्रिकर रक्षा अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान (2023), भारत और मालदीव संबंध और चीन, URL: https://www.idsa.in/idsanews/india-maldives-relations-and-china
3. अब्ज़र्वर रीसर्च फ़ाउंडेशन (2023), भारत, मालदीव और समुद्री सर्वेक्षण का एक समझौता,
4. URL:https://www.orfonline.org/hindi/expert-speak/maldives-india-and-a-hydrography-pact1
5. सेंटर फ़ोर लैंड वेल्फ़ेयर स्टडीज़ (2023), भारत-मालदीव संबंधों की गतिशीलता: बदलाव, तनाव और भू-राजनीतिक निहितार्थ, URL: https://www.claws.in/7556-2/
6. अब्ज़र्वर रीसर्च फ़ाउंडेशन (2023), भारत प्रमुख भौगोलिक क्षेत्रों में: दक्षिण एशिया, URL: https://www.orfonline.org/expert-speak/india-in-pivotal-geographies-south-asia-54281
7. वेग्नर, क्रिस्चन (2023), "दक्षिण एशिया में भारत की सुरक्षा प्रदाता की भूमिका", *दक्षिण एशिया अध्ययन संस्थान*, वॉल्यूम-1, संख्या-1, पृष्ठ संख्या-1-33
8. गांगुली, सुमित (2017), "भारत की विदेश नीति", द *वाशिंगटन कुआर्टेरली*, वॉल्यूम-40, संख्या-2, पृष्ठ संख्या-131-143
9. अब्ज़र्वर रीसर्च फ़ाउंडेशन (2022), भारत-मालदीव संबंध: सोलिह की हाल की भारत यात्रा, URL: https://www.orfonline.org/hindi/expert-speak/india-maldives-relations-solihs-recent-visit-to-india
10. कपूर, रितिका (2020), "भारत के लिए मालदीव का महत्व", *नेशनल मैरिटाइम फ़ांउडेशन,* वॉल्यूम-1, संख्या-1, पृष्ठ संख्या- 1-10

11. ज़हीर, अज़ीम (2021), "हिंद महासागर में भारत-चीन प्रतिद्वंद्विता: एक नई भारत-मालदीव रणनीतिक गतिशीलता का उद्भव", *हिंद महासागर का जर्नल,* वॉल्यूम-17, संख्या-1, पृष्ठ संख्या-78-95
12. रंजन, अमित (2021), "मालदीव की भूराजनीतिक दुविधा: भारत-चीन प्रतिद्वंद्विता, और अमेरिका का प्रवेश", *एशियाई मामलों का जर्नल,* वॉल्यूम-52, संख्या-2, पृष्ठ संख्या-375-395
13. ठाकुर, हरीश के॰ (2023), "मालदीव में चीन से मुकाबला: भारत की विदेश नीति चुनौती", *अंतर्राष्ट्रीय मामलों का राष्ट्रमंडल जर्नल*, वॉल्यूम-112, संख्या-4, पृष्ठ संख्या- 421-437
14. स्मृति, एस॰ पटनायक (2019), "नेपाल, श्रीलंका और मालदीव में चीन के निवेश और सहायता पर भारत की नीति प्रतिक्रिया: चुनौतियाँ और संभावनाएँ", *सामरिक विश्लेषण*, वॉल्यूम-43, संख्या-3, पृष्ठ संख्या- 240-259
15. मनोहरन, एन॰ (2024), *भारत-मालदीव विकास साझेदारी: वादे और संभावनाएं*, नई दिल्ली: रूतलेज पब्लिकेशन